जिसे पाने में न जाने हमने कितनों की खोया वह है आजादी। जिसे पाने में पुरा भारत रक्त जुट हो अया या वह है आजादी।

आज जो हम त्यड़को पर चैन से जा पा यह है वह है आजही।

डंकताब जिंदाबाद के नारे जिस कारन तारे ये वह है आजादी। सत्यागृह से लेकर डांडी सार्च तक जिस कारन हुआ वह है आजादी।

हमाठे देश में उत्वंत्रता है यही तो है आजाही।

हम जिसे चाहे उसे चुनाव में चुन सकते हैं यही तो है आजादी।

हमें अपना मत रखने का पुरा अधिकार हैं यही तो है आनिही।

Name: वैष्णवी गणेश मंद्रा . कशा: 12वी.

E-mal= Vashnavimanza@gma91.com.